https://www.echetana.com/Vol.-11, No.-02, April-June 2026, pp. 32-33

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

हरीश नवल के व्यंग्य– साहित्य में विविधता

शिल्पा वर्मा
पीएचडी शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
Email-sv6496509@gmail.com, Mobile-7427094046

……………………………………………………………………….
First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

किसी काल विशेष की समस्याओं, विशेषताओं, विवशताओं आदि को समझकर उन पर विचार करने का कार्य साहित्य बखूबी करता है। हिन्दी व्यंग्य के क्षेत्र में जिन व्यंग्यकारों ने इस उद्देश्य की पूर्ति की, उनमें हरीश नवल का भी महत्वपूर्ण नाम है। उनके व्यंग्य साहित्य में विविधता के दर्शन होते हैं। लेखक ने अपने व्यंग्यों में राजनीतिक– सामाजिक– वैयक्तिक आदि विसंगतियों को दर्शाने के लिए अपने व्यंग्यों में शैलीगत विविधता का प्रयोग किया है।

मुख्य शब्द: *जाति; सजातीय विवाह; जाति-अंतर्विवाह; अंतरजातीय विवाह; दबावपूर्ण विवाह; वैवाहिक सहमति; सम्मान-आधारित अपराध; सामाजिक बहिष्कार; खाप पंचायत; आंबेडकर.*

प्रस्तावना

साहित्य में अपने युग के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियों और विमर्शों को व्यंग्यकार व्यंग्य लेखन के माध्यम से करता है। व्यंग्य में प्राय: परोक्ष रूप से अभिव्यक्ति होती है। व्यंग्य का लक्ष्य जागृत करना होता है। अत: युगीन स्थितियों का बोध व्यंग्यकार का उद्देश्य होता है।

हिन्दी गद्य व्यंग्य के परिदृश्य को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से अपने शोध कार्य में सम्मिलित किया जा सकता है। उससे पूर्व के काल में व्यंग्य का निस्तारण कविता से था।

हरिशंकर परसाई से व्यंग्य की नवीन धारा प्रवाहित होती है। उन्हीं के साथ शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी और श्रीलाल शुक्ल व्यंग्य के सुदृढ़ स्तंभों के रूप में है।

हरीश नवल ने उन्हीं के समय से व्यंग्य लिखना आरम्भ कर दिया था। इनके अनुसार, "हास्य निर्मल आनंद देता है और व्यंग्य करुणा की ओर ले जाता है।"

इनके व्यंग्यों में पर्याप्त विविधता के दर्शन होते हैं, जिससे व्यंग्यों में रोचकता आई है। सन 1965 में उनकी व्यंग्य कथा 'मिस्टर कमेंट्रीदास' आगरा से प्रकाशित होने वाली व्यंग्य की पत्रिका 'नोंक झोंक' में छपी थी। किसी पत्रिका में प्रकाशित होने वाली यह उनकी प्रथम व्यंग्य रचना थी। उसके बाद के छुटपुट व्यंग्य लेखन के बाद सन 1972-73 से उन्होंने अनवरत व्यंग्य लिखना आरम्भ कर दिया। उनकी रचनाएँ तत्कालीन बड़ी पत्रिकाओं धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका, कादम्बिनी, नवनीत और समाचार पत्रों नवभारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान, आज, नवभारत, राजस्थान पत्रिका, पंजाब केसरी, अमर उजाला आदि में प्रकाशित होती रहीं।

सन 1987 में भारतीय ज्ञानपीठ व्यंग्य प्रतियोगिता में उन्हें युवा ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया तथा ज्ञानपीठ द्वारा उनका प्रथम व्यंग्य संकलन 'बागपत के खरबूजे' प्रकाश में आया, जो व्यंग्य की युवा धारा का प्रतीक बना और उसकी गणना बीसवीं शती की सौ सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में की गई।

विनोद खेतान के अनुसार, " 'बागपत के खरबूजे' व्यंग्य विधा की सर्वदा आश्वस्त करने वाली किताब है, जिसमें सूक्ष्म दृष्टि सामयिक संदर्भों का भी एक शाश्वत कोण भेदती है; जीवन की अद्भुत सच्चाइयों से साक्षात्कार कराती है और भाषा और शिल्प की दृष्टि से लेखक की प्रतिभा को खूब रेखांकित करती है। साथ ही कथ्य के स्तर पर व्यापक एवं मौलिक कल्पनाशीलता का जीवंत प्रमाण देती है।"

हरीश नवल के व्यंग्य लेखन में अपने युग की प्राय: सभी धाराओं का समावेश पाठकों और आलोचकों को प्रभावित करने लगा। उनके कई अन्य संकलन प्रकाशित हुए तथा चर्चित भी। उनके द्वारा लिखा गया उनका प्रथम व्यंग्य उपन्यास 'बोगी नम्बर 2003' आज के सर्वाधिक चर्चित रचनाओं में है।

सम्प्रति हरीश नवल की ख्याति अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर है तथा उनकी रचनाओं का अनुवाद पंजाबी, मराठी, उड़िया, तमिल, बंगला, उर्दू, और फ्रेंच में भी हुआ। उनके साहित्य में युग बोध उनके गहन अनुभवों और यात्राओं के कारण और भी मुखरित हुआ।

हरीश नवल के व्यंग्य साहित्य में विविधता

हिंदी व्यंग्यकार हरीश नवल द्वारा लिखित कई पुस्तकों में संकलित व्यंग्यों का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनकी व्यंग्य शैली सामान्य नहीं है, वरन पर्याप्त विविधता लिए हुए है, जो न केवल इनके गहन साहित्यिक ज्ञान की

द्योतक है, बल्कि पठन में पाठक की रूचि को भी बढ़ा देती है। अग्रलिखित उदाहरणों में ये विविधता दृष्टिगोचर होती है।

'दिल्ली चढ़ी पहाड़' में लेखक के व्यंग्य की विविधता देखिए।

"जब से नलकुबेर का वर्ग आया है, जड़ें दिल्ली में रखता है और पहाड़ों पर पनपता है......जो चढ़ाई दिल्ली वाले कर रहे हैं, उसका तो जवाब ही नहीं, रौंदकर रख दिया उन्हें, उनकी ऊँचाई धंसा दी है.... यों मसूरी के रूप में दरअसल दिल्ली ही पहाड़ पर है ...।"

हरीश नवल द्वारा लिखित 'जै जै दिल्ली की जे जे कॉलोनियां' में निर्माण, व्यवस्था, विकास आदि की व्यंग्यात्मक शैली पढ़ने योग्य है।

इनकी व्यंग्य रचना 'दिल्ली दिलवालों की' में यहाँ की संस्कृति के पश्चिमी सभ्यता से धूमिल होने की व्यथा को लेखक ने उभारा है।

'डॉलर भाग्यविधाता' व्यंग्य में इनकी मुहावरा शैली का रोचक उदाहरण इस प्रकार है- "संचित डॉलर का मूल्य सुरसा के मुख का मुकाबला करेगा।"

'दिखते हैं, होते नहीं' व्यंग्य में व्यंग्यकार ने गंभीर दार्शनिकता का परिचय दिया है। पंक्तियाँ इस प्रकार है- "कैसी विडंबना है कि हम 'होना' नहीं, दिखना चाहते हैं।......सच में हम शो पीस हैं, केवल दिखते हैं, होते नहीं।"

हरीश नवल के एक व्यंग्य 'नेता हवा में' में राजनीतिक विडंबना प्रदर्शित होती है - " हर नेता हवाई यात्री होता है। वह हवा में तो उड़ता ही है, अपनी हवा भी बनाए रखता है और बहुधा औरों की हवा ख़राब करता है।"

'तकनीकी अवतारवाद' शीर्षक व्यंग्य में, " 'विश्वग्राम' का स्थान 'इंस्टाग्राम' ने लिया। 'फेस टू फेस' होते सम्बन्ध फेसबुकीय हो गए हैं। प्रमोद हेतु रिमोट है, साक्षात् संवाद के स्थान पर ट्वीट है।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हरीश नवल के व्यंग्य साहित्य में पर्याप्त शैलीगत विविधता है जिससे इनके व्यंग्य रोचक बन पड़े हैं।

हरीश नवल के व्यंग्य लेखन पर कई प्रसिद्ध व्यंग्यकारों ने विचार रखे हैं।

हरिशंकर परसाई के अनुसार- " 'बागपत के खरबूजे से' हरीश नवल का व्यंग्यकार पूरी तरह सामने आया है। उनके व्यंग्य निबंधों में एक महीन मार्ग और एक अभिजात्य सौम्यता है। "

हरीश नवल द्वारा जैनेन्द्र कुमार को कविता सुनाने पर उन्होंने कहा, " व्यंग्य अच्छा लिख सकते हो, इसमें खूब व्यंग्य है।"

श्रीलाल शुक्ल के अनुसार- "हरीश नवल ने व्यंग्य की सत्ता स्थापित की है।"

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हरीश नवल के व्यंग्य साहित्य में पर्याप्त विविधता दृष्टिगोचर होती है।

सन्दर्भ सूची

- इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ, डायमण्ड बुक्स, नई दिल्ली, 2017
- डॉलर भाग्य विधाता, न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2022
- बोगी नम्बर 2003, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
- गाँधी जी का चश्मा, किताबगंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी (राजस्थान), 2018
- वाया पेरिस आया गांधीवाद, नवराज प्रकाशन, दिल्ली, 2002
- माफ़िया ज़िन्दाबाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018